सामाजिक दायरे के तौर पर स्कूलों को नया आकार देना

सुबीर शुक्ला

शायद स्कूल अब वैसा नहीं रहा जैसा हम उसे समझते हैं

सन 1995 में उत्तर प्रदेश के ज़मीनी दौरे पर मैं एक दूरदराज़ के इलाक़े में स्थित स्कूल में गया। उसी समय एक अफ़वाह चल रही थी कि विश्व बैंक की एक बड़ी योजना, जो स्कूलों की आधारभूत संरचना के विकास के लिए फंडिंग कर रही थी, बन्द हो रही है। सभी परेशान और डरे हुए थे कि एक बार फंड मिलना बन्द हो जाएगा तो स्कूली संरचना ठप्प हो जाएगी। हालाँकि, एक शिक्षक ने कुछ ऐसा कहा जिसने शिक्षा को लेकर मेरा नज़रिया पूरी तरह से बदल कर रख दिया। उसने दृढ़ता भरे स्वर में कहा, "मैं अपने स्कूल के बारे में बिल्कुल भी चिन्तित नहीं हूँ, क्योंकि मेरा स्कूल किसी बिल्डिंग में नहीं है या कि किसी फ़र्नीचर या आपूर्तियों में — यह इस बात में निहित है कि मेरे और बच्चों के बीच *क्या होता* है। लोग आकर दरवाज़े या ईंटें तक निकाल ले जा सकते हैं लेकिन वे मेरे स्कूल को नहीं मिटा सकते।

क्यों है ना तगड़ा नज़रिया?

हमें ख़ुद से यह सवाल ज़रूर पूछना चाहिए : स्कूल में ऐसा क्या ख़ास होता है जो इसे एक स्कूल बनाता है? चलिए इसे केवल 'सीखना' नहीं कहते हैं — बल्कि उन सभी क्रियाओं के बारे में सोचते हैं जिनका इस्तेमाल हम कर सकते है : बातचीत करना, खेलना, काम करना, लिखना, सुनना, चित्र बनाना, प्रयोग करना, सम्बन्ध जोड़ना, पढ़ना, व्याख्या करना, पूछना, निर्देश देना, सुनाना, कोशिश करना, बढ़ावा देना, विनिमय करना, मिलना, खोजना, तर्क करना, ख़्याल रखना, बनाना, सृजन करना, निष्कर्ष निकालना, सहमत होना, मदद करना, प्रतिस्पर्धा करना, अन्वेषण करना, चिन्तन करना, सराहना, देना, मार्गदर्शन करना, साझा करना, मज़े करना, नापसन्द करना, रिश्ता बनाना आदि। और यहाँ तक कि वे क्रियाएँ भी, जिनमें दूसरे शामिल होते नहीं दिखाई देते (जैसे 'चिन्तन करना'), दूसरों के साथ की जा सकती हैं या दूसरों द्वारा कुछ कहे या किए जाने के आधार पर उद्दीपित हो सकती हैं।

आप देख सकते हैं कि इनमें से ज़्यादातर 'क्रियाओं' में अन्य लोग शामिल हैं : शिक्षक, सहपाठी, स्कूली कर्मचारी या समुदाय के सदस्य। दरअसल लोगों के बीच जो कुछ होता है — बुनियादी रूप से सम्बन्धों का ऐसा समूह, जिसके भीतर ख़ास तरह की प्रक्रियाएँ होती हैं ताकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सके — वही स्कूल है।

अगर आप अपने बचपन में जाएँ तो आपको याद आएगा अपने दोस्तों का साथ होना, स्कूल जाने में आपके माता-पिता आपकी क्या मदद करते थे, आपके शिक्षक आपसे कैसे बात करते थे, शायद कुछ आयोजन भी जिनमें आप अपने सहपाठियों के साथ शरीक़ हुए हों। दरअसल ये जुड़ाव, ये सम्बन्ध ही हैं जो हमारे साथ रहते हैं।

> इसलिए स्कूलों के दोबारा खुलने के तुरन्त बाद ही अधिगम के मूल्यांकन करने के बारे में सोचना एक भूल होगी। यह ऐसा मान लेना है कि स्कूल मूलत: एक अकादमिक जगह है जहाँ बच्चे मुख्य तौर पर परीक्षाएँ पास करने के लिए जाते हैं। इस बात को समझना, ज़्यादा ज़रूरी नहीं तो कम-से-कम इतना ही ज़रूरी है, कि बच्चों ने इस दौर में अपने सामाजिक सम्बन्धों के मामले में क्या खोया है और उनके भावनात्मक विकास एवं मानसिक स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ा है।

स्कूल के 'सामाजिक दायरे' और 'सामाजिक भूमिका' का महत्त्व

इसमें कोई शक़ नहीं कि ये सामाजिक सम्बन्ध अपने आप में ज़रूरी हैं या यही हैं जो भी हैं। पहली बात तो यह कि अकादमिक अधिगम, जिसे हम सबसे मूल्यवान मानते हैं, बिना सामाजिक पक्ष को ध्यान में रखे नहीं हो सकता। वायगोट्स्की और ब्रूनर जैसे विचारकों ने हमें लगातार यह बताया है कि कैसे ज्ञान का सृजन एक सामाजिक प्रक्रिया है, न केवल शिक्षक और विद्यार्थी के बीच बल्कि विद्यार्थियों के अपने बीच भी। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका कक्षा में ऐसा माहौल बनाने की होती है जहाँ बच्चों को, बीच-बीच में शिक्षक की मदद से साथ, मिल-जुलकर काम करने और सोचने की ज़रूरत होती है। यह एक-दूसरे के साथ अपने विचारों, अनुभवों व नज़रियों को साझा करना और सहपाठियों के साथ सोच-विचार करना ही है जो पहले के मुक़ाबले एक नई और ज़्यादा समृद्ध समझ की ओर ले जाता है।

शिक्षक की 'मददकर्ता' की भूमिका एक सामाजिक भूमिका है। बजाय इसके कि जो आपको आता है केवल उसे बताते जाएँ, आपसे उम्मीद की जाती है कि आप बच्चों का

अवलोकन करेंगे और जहाँ ज़रूरत हो उनके कामों में अपना सहयोग देंगे। मसलन, आप ऐसा कह सकते हैं, 'स्कूल के पास वाली ज़मीन पर बच्चों के लिए पार्क बनाने के लिए एक योजना तैयार करें। इसे जितना हो सके विस्तृत बनाएँ और इसकी लागत का हिसाब लगाने की भी कोशिश करें। इसकी चर्चा अपने समूह में करें और शुरुआत इस बात पर सहमति बनाकर करें कि आप इसको *कैसे* करेंगे।' आप इसके बाद के क़दमों की कल्पना कर सकते हैं। आप बेझिझक अपनी समझ के मुताबिक इसमें समय-समय पर कुछ मदद कर सकते हैं, जैसे परिमाप या क्षेत्रफल मापना; लागत के हिसाब के तरीक़े; ज़रूरी साइन बोर्ड कौन-से होंगे आदि। लेकिन आप यह मदद तभी करें जब बच्चे ऐसी स्थिति में हों कि उन्हें इसकी आवश्यकता हो। यह शिक्षक को एक अवलोकनकर्ता, एक अनियमित प्रतिभागी, एक सजग सहायक बनाता है। दूसरे शब्दों में, एक *सामाजिक* प्राणी जो क़िस्मत से एक अकादमिक भूमिका में भी है। क्या यह सब हमें 'हमारा पाठ्यक्रम पूरा करने' में मदद करेगा? सीधा जवाब : हाँ, इसके बारे में मैंने एक दूसरे लेख में लिखा है।[i]

हालाँकि, इस सबके दरमियान बच्चे भी कुशल सामाजिक प्राणी बनना सीख रहे हैं। खेल के मैदान में; स्कूल जाने के रास्ते में; बस के अन्दर; मध्याह्न भोजन के दौरान या पानी के नल के आसपास होने वाले सभी संवादों व मेल-जोल का योगदान एक बच्चे के विकास में होता है। (आप अपने बचपन पर विचार कर ख़ुद के लिए उन सभी चीज़ों की एक सूची बना सकते हैं जो आपने इन परिस्थितियों में सीखी थीं और कैसे आपके व्यक्तित्व का विकास हुआ)। ज्ञान की वह 'सामाजिक रचना', जिसका ज़िक्र पहले हुआ है और वह मेलजोल, जो बच्चे स्कूलों में अनुभव करते हैं, आने वाली ज़िन्दगी में उन्हें दूसरों के साथ रहने और काम करने के लिए तैयार करने का महत्त्वपूर्ण काम करते हैं। ये बच्चों के भावनात्मक विकास का आधार भी बनाते हैं। गाँधी और टैगोर दोनों ने इस 'दिमाग़, हाथ एवं दिल' ('हाथ' का तात्पर्य बच्चों के एक-दूसरे के साथ काम करने से है) की शिक्षा की बात की। यद्यपि इस तरह से ख़ुद से परे जाकर उस ढंग पर जाना जिसमें बच्चे एक-दूसरे से जुड़ना सीखते हैं, अन्ततः एक सुदृढ़ लोकतांत्रिक समाज के आधार का निर्माण करता है।

पिछले दो सालों में, महामारी ने लगातार यह दिखाया कि हम ज़िन्दा रहने और साथ-ही-साथ आगे बढ़ने के लिए भी एक-दूसरे पर कितने आश्रित हैं। लगातार गहराते जलवायु परिवर्तन के संकट की भी यह माँग है कि हम अपने व्यक्तिगत घेरों से परे जाकर देखें कि कैसे हम एक-दूसरे को नुक़सान पहुँचा रहे हैं और एक सामूहिक वैश्विक समाज के रूप में हमें कौन-से क़दम उठाने की ज़रूरत है। हमारा भविष्य सहयोग और सहकारिता में है, साथ मिलकर संकटों का सामना करने में है और एक-दूसरे संग काम करने में है। दूसरों की क़ीमत पर आगे बढ़ने की कोशिश करते-करते आज हमारे पास एक साथ आगे बढ़ने और सफल होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है — और स्कूल ही वह जगह है जहाँ यह ज़रूरत है कि हम इस तरह के अधिगम को सोच-विचार के ज़रिए और सुव्यवस्थित तौर से होने देने का प्रयास करें, न कि इसे अपने से होने के लिए छोड़ दें।

तो अब हम यहाँ से किस ओर जाएँ? स्कूलों के दोबारा खुलने पर क्या करें, ख़ासकर छोटे बच्चों के लिहाज़ से? कैसे हम नए ढंग के सामाजिक दायरे को बनाने की ओर बढ़ें जो आज के समय में ज़रूरी है।

आने वाले महीनों में हमें क्या करने की ज़रूरत है

आने वाले महीनों में, ज़्यादा-से-ज़्यादा स्कूल खुलेंगें। और ऐसी स्थितियाँ भी आ सकती हैं, जब वे फिर से बन्द कर दिए जाएँ। इसलिए, फिलहाल के लिए या लम्बे समय के लिए भी सामाजिक सम्बन्धों पर ध्यान देने से फ़ायदा मिलेगा। महामारी की वजह से जो एक लम्बा ब्रेक मिला, वह स्कूलों को सामाजिक दायरे के रूप में दोबारा शुरू करने और निर्मित करने का मौक़ा भी लेकर आया है।

स्कूलों के फिर से खुलने की स्थिति में

लॉकडाउन और पाबन्दियों के दौरान, बच्चों तक पहुँचने के लिए हम माँ-बाप, वालंटियरों और समुदायों पर आश्रित हो गए थे। स्कूल के फिर से खुलने के पहले हमारा उन्हें अपने साथ जोड़ना और उनके साथ काम करना उपयोगी होगा। इसके लिए कुछ क़दम जो उठाए जा सकते हैं :

- स्कूल के खुलने से पहले समुदाय के साथ बैठक करके स्कूल के दोबारा खुलने की योजना बनाएँ। इसमें साथ काम करने की परिस्थितियों पर भी बात हो ताकि स्वच्छता और सुरक्षा की ज़रूरतों को सुनिश्चित किया जा सके।
- आने वाले हफ़्तों के लिए अपनी अकादमिक योजना समुदाय के साथ साझा करें और यह भी बताएँ कि उन्हें क्या करने की ज़रूरत पड़ेगी।

इस दौरान इस बात पर ज़ोर देते रहना ज़रूरी है कि भविष्य में समुदाय की भूमिका स्कूलों के ज्ञान सम्बन्धी भागीदार की होगी और महज़ व्यवस्था बनाने या प्रबन्धन तक सीमित नहीं रहेगी।

दोबारा स्कूल खुलने वाले दिन और अगले कुछ दिनों के लिए,

यह ज़रूरी है कि उत्साह और उम्मीद का माहौल बनाया जाए और इसके लिए कुछ क़दम उठाए जा सकते हैं, जैसे :

- अब जब हम फिर से एक साथ आ रहे हैं तो माता-पिता और समुदाय के साथ 'पुनरारम्भ मेले' जैसे किसी उत्सव का आयोजन हो।
- परिवारों को मौक़ा दें कि वे पिछले दो सालों के अपने अनुभवों को बयाँ कर पाएँ।
- स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़े प्रोटोकॉल के अनुसरण पर एकमत हों (इसे केवल बच्चों पर ही न थोपें)।
- बच्चों को उनके दोस्तों के साथ रहने और खेलने का समय दें। शुरुआत के कुछ दिन एक तरह से अव्यवस्थित ही रहने दें।
- कुछ समय हर एक बच्चे के अनुभवों को सुनने में बिताएँ, ख़ुद के अनुभव भी साझा करें और चर्चा करें कि इन हालातों से गुज़रते हुए हमने क्या सीखा व अगली बार हमारी प्रतिक्रिया कैसे भिन्न होगी।
- बच्चों को बताएँ कि सीखने की प्रक्रिया में उनकी भूमिका किस तरह बदल रही है। कैसे हम सब आने वाले साल में एक-दूसरे का सहयोग करेंगे और यह कि उनकी भूमिका पहल को सामने लाने, अपने दोस्तों का सहयोग करने और ख़ुद के और एक-दूसरे के सीखने पर नज़र रखने की होगी।
- उन क्षेत्रों पर चर्चा करें जिनमें वे कमज़ोर महसूस करते हैं। सीखने-सिखाने को लेकर अपनी योजनाओं की चर्चा उनसे करें, शैक्षणिक नियमों/ प्रोटोकॉल का पालन किए जाने को लेकर एकमत हों।
- बच्चों को भरोसे में लें और उन्हें बताएँ कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को दोबारा पूरी क्षमता पर लाने के लिए आपके लिए यह जानना ज़रूरी है कि उन्होंने अब तक कितना सीखा है।
- आख़िरकार, उनकी अनुमति और स्वैच्छिक भागीदारी के मुताबिक मूल्यांकन करें।

'नए आकार में ढले स्कूल' की ओर

अब जब आपको ज़्यादा गहरे और दोतरफ़ा सम्बन्धों को लेकर मज़बूत शुरुआत मिली है, आप इसे आगे कैसे जारी रख सकते हैं? इसे नीचे दिए चरणों के सन्दर्भ में रखकर देखना मददगार साबित हो सकता है।

चरण 1 : इस पुनरारम्भ का उपयोग एक नए सफ़र की शुरुआत के रूप में करें

- पाठ्यपुस्तकों और सामग्रियों का परिचय दिलचस्प तरीक़े से दें। उदाहरण के लिए, इसके लिए क्विज़ कैसा रहेगा जो बच्चों को पाठ्यपुस्तक की छान-बीन करने के लिए प्रोत्साहित करे, जैसे सबसे लम्बा अध्याय कौन-सा है, किस शब्द का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा हुआ है (उदाहरण के लिए 'बल' या 'प्रकाश'), सबसे लम्बा सवाल कौन-सा है, इत्यादि।
- शुरुआत अधिक-से-अधिक ऐसे सवालों के इस्तेमाल से करें जिनके विस्तृत जवाब हों (अगर आप चाहें, तो पता करें कि ऐसे सवाल किस तरह के होते हैं और वे विभिन्न विषयों और कक्षाओं पर कैसे लागू होते हैं)।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को और ज़्यादा 'सामाजिक' रूप देने की ओर सहजता से चरण-दर-चरण बढ़ें : शुरुआत अधिकतर मौखिक कार्य साथ मिलकर करने के प्रोत्साहन से करें। इसके बाद समूहों में ज़्यादा-से-ज़्यादा पढ़ाई-लिखाई के कामों की तरफ़ और अन्त में वस्तुओं या उपकरणों का मिल-जुलकर उपयोग करने की ओर बढ़ें। (मसलन, यही क्रम क्यों? अनुमान लगाइए!)
- बच्चों के साथ कुछ उद्देश्य तय करें — उनके साथ मिलकर 'अध्ययन को दोबारा पटरी' पर लाने की प्रक्रिया की पहल करें। समूहों के साथ विभिन्न स्तरों पर तथा बहुस्तरीय समूहों के साथ मिलकर काम करें।
- बच्चों को उद्देश्य तय करने के लिए एवं ख़ुद की जाँच के लिए विभिन्न गतिविधियों की माँग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- शैक्षिक प्रवीणता के लिए रचनात्मकता, चिन्तन, विश्लेषण, निर्णय लेने की क्षमता, अध्ययन कौशलों और भाषा में सुधार कर, बच्चों को स्वयं सीखने के लिए तैयार करें (आप इन सभी से जुड़ी गतिविधियों को इंटरनेट पर देख सकते हैं)।

चरण 2 : स्वतंत्र मगर सामाजिक रूप से जुड़े शिक्षार्थियों की ओर

- साथ मिलकर पाठ्यपुस्तकें पढ़ने (जी हाँ, विद्यार्थी यह अपने दम पर कर सकते हैं), जानकारियों और विषयवस्तु को इकट्ठा करने, चीज़ों को समझने एवं अन्वेषण करने में एक-दूसरे की मदद करने के लिए विद्यार्थियों के बीच स्वयं सहायता समूह बनाएँ ताकि जितना हो सके वे साथ मिलकर सीखने की कोशिश कर पाएँ। इसके बाद आप उनकी ख़ुद से करने की क्षमता को विस्तृत करने में मदद करने की भूमिका निभा सकते हैं (उदाहरण के लिए, उनसे यह सवाल पूछना : तुम्हारे मुताबिक इसका मूल्य क्या होगा?)।

- विचार करें कि वे कौन-से फ़ैसले, ज़िम्मेदारियाँ और भूमिकाएँ हैं जो आप बच्चों को सौंप सकते हैं। फिर, उनके साथ इन पर चर्चा करें और इस तरह कक्षा/ स्कूल चलाएँ जहाँ विद्यार्थी अहम भूमिका में हों।
- विद्यार्थियों के प्रदर्शन को लेकर ख़ुद उनके साथ एवं उनके माता-पिता और साथी शिक्षकों के साथ चर्चा करें — पता लगाएँ कि उनके प्रदर्शन में सुधार करने के लिए सभी को (आपके समेत) क्या करने की ज़रूरत है। आपका लक्ष्य इस सवाल का जवाब ढूँढ़ना है कि सबकी शिक्षा सबकी ज़िम्मेदारी किस तरह बन सकती है।
- समुदाय को ज्ञान के सहभागी के रूप में शामिल करें — समुदाय के ऐसे बहुत-से सदस्य हैं जिनके पास कक्षा में साझा किए जा सकने वाले अनुभव और ज्ञान के क्षेत्र हैं (एक ट्रक चालक भारत का भूगोल किसी से भी बेहतर जानता है, लुहार धातुओं से अशुद्धियों (मिलावट) को अलग कर सकता है, एक बुनकर को निर्देशांकों की बेहतरीन समझ होती है)। आप समृद्ध संसाधनों से घिरे हुए हैं।

चरण 3 : आपके स्कूल के लिए एक नई दृष्टि

अब जब आपने सभी शुरुआती क़दम उठा लिए हैं, तो सबको साथ लेकर आगे बढ़ना सही रहेगा। इसलिए माता-पिता, स्कूल प्रबन्धन समिति (एसएमसी), समुदाय और स्वयं विद्यार्थियों को शामिल करने की ओर काम करें ताकि आपके स्कूल के लिए एक दीर्घकालिक दृष्टि बन सके। अपने आपसे कुछ सवाल पूछें, जैसे कि :

- स्कूल में ऐसी कौन-सी मूल समस्याएँ हैं कि जो आपके द्वारा सम्भाली जा सकती हैं? (उदाहरण के लिए, कुछ बच्चे उतना शरीक़ नहीं होते जितना वे हो सकते हैं या उतना नहीं सीखते जितना सीख सकते हैं; कुछ शिक्षक नई पहल करने से कतराते हैं, कुछ माता-पिता उतना सहयोग नहीं करते इत्यादि।) अगर इन समस्याओं का हल निकल आए तो आपके स्कूल में सबसे बड़े बदलाव क्या होंगें?
- नतीजतन, आज से पाँच साल बाद आपके स्कूल में क्या हो रहा होगा जो आज नहीं होता है? (उदाहरण के लिए, प्राथमिक विद्यालय में, रिपोर्ट की जगह माता-पिता से बातचीत ले लेगी।)
- आप अलग-अलग लोगों को ऐसा क्या कहते सुनेंगे जो वे आज नहीं कहते?
- आपके बच्चों में क्या गुण होंगे? एक समूह के तौर पर वे किस प्रकार भिन्न होंगें?
- शिक्षकों और स्कूल के प्रमुख के पास कौन-से कौशल और क्षमताएँ होंगी? एक समूह के तौर पर वे किस प्रकार भिन्न होंगे?
- समुदाय की भूमिका में क्या बदलाव आएगा? हमें कैसे पता चलेगा कि यह एक उपयोगी नाता है?
- आप किन बाधाओं को दूर करेंगे? किनकी मदद से? कैसे?
- आप (आपके मित्र/ सहयोगी/ समुदाय) कौन-से क़दम उठाएँगे? कौन क्या करेगा और कब तक?

इन सबको एक योजना में तब्दील कर लें — एक दीर्घकालिक योजना जिसका एक हिस्सा आप अगले तीन महीने में लागू कर लेंगे और सब के साथ इस दिशा में काम करेंगें।

निष्कर्ष

शिक्षक अक्सर कहते हैं कि उन्हें ऐसे बदलाव करने की इजाज़त नहीं है। याद रखें, अगर हम बुरी तरह पढ़ाने के लिए स्वतंत्र हैं तो हम सुधार करने के लिए भी स्वतंत्र हैं। हमें कौन रोकता है अधिक मुस्कराने से, देसी सामग्री का उपयोग करने से (क्या आप जानते हैं कि पत्तियाँ 5-5 ,3-3 ,2-2 ,1-1 और 7-7 के समूहों में बढ़ती जाती हैं और गुणन के लिहाज़ से एक शानदार साधन हैं?) या एक कहानी को पढ़ते हुए ऐसी दिलचस्प जगह पर अधूरा छोड़ देने से, ताकि बच्चे बाक़ी की कहानी ख़ुद से पढ़ना चाहें? कुछ अन्य सुझाव हो सकते हैं : हर हफ़्ते ऐसे एक बच्चे/ समूह पर ध्यान आकृष्ट करना जो दूसरों के लिए सबसे अधिक मददगार रहा हो, अत्यधिक रचनात्मक चुनौतियों को सामने रखना जिन्हें एक साथ मिलकर पूरा किया जा सके (उदाहरण के लिए, उनसे पूछना कि अगर उन्हें केवल एक हाथ का उपयोग करने की अनुमति हो तो वे कक्षा के फ़र्नीचर को नए तरीक़े से कैसे जमाएँगे), बच्चों का मूल्यांकन व्यक्तिगत रूप से न करके एक समूह के तौर पर करना इत्यादि। शिक्षक की अपनी भूमिका का आनन्द लेने से और अपनी कक्षा एवं स्कूल में जो रिश्ते हम बना पाते हैं (नतीजतन जिस सीखने को अंजाम दे पाते हैं) उनमें सन्तुष्टि ढूँढ़ने से हमें कोई नहीं रोकता।

बहरहाल, जो कुछ भी ऊपर लिखा गया है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य भी यही है। जैसे ही आप नए रूप में ढले एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी स्कूल की तरफ़ बढ़ रहे होते हैं, तो अच्छी-ख़ासी गुंजाइश है कि आपको एक उदाहरण के तौर पर पेश कर दिया जाए!

Endnotes

i Subir Shukla. Why We Need Responsive Schools. Learning Curve. *Every Child Can Learn Part 2.* April 2020. Issue 7. Pp 92.

ii For example: https://chachi.app and https://mananbooks.in/downloads/ for material containing activities

सुबीर शुक्ला इग्नस समूह के साथ हैं और भारत एवं अन्य एशियाई व अफ़्रीकी देशों के शिक्षा तंत्रों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए काम करते हैं। इसमें मुख्य रूप से उनका ध्यान हाशियाग्रस्त बच्चों की ज़रूरतों पर होता है। इससे पहले वे डीपीईपी के मुख्य सलाहकार तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार सलाहकार थे और उन्होंने आरटीआई-2009 की गुणवत्ता रूपरेखा बनाने के काम का नेतृत्व किया था। वे विशेषज्ञों की उस टीम के सदस्य भी हैं जिसे नीति आयोग ने भारत की स्कूली शिक्षा की दृष्टि-2035 को विकसित करने का काम सौंपा है। वे बच्चों के लिए लिखते हैं और उनकी कृतियाँ मनन बुक्स के ज़रिए प्रकाशित होती हैं। साथ ही, वे बच्चों के लिए *चहक* नामक बुनियादी शिक्षा की एक पत्रिका भी निकालते हैं। हाल ही में उन्होंने *चाइल्ड डेवेलप्मेंट एंड ऐजुकेशन इन द ट्वेंटी-फर्स्ट सेंचुरी* (स्प्रिंगर, सिंगापुर द्वारा प्रकाशित, अक्तूबर 2019) नामक क़िताब का सह-लेखन किया है। उनसे subirshukla@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अभिषेक दुबे